वर्ष-१२ अंक-८
२७ अप्रैल २०१६

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रु.

ओ३म्

# वैदिक रवि

## मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

# एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
**वैदिक-रवि**
मासिक

वर्ष-१२ अंक-८

२७ अप्रैल २०१६
( सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार )
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९१

**सलाहकार मण्डल**
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

**प्रधान सम्पादक**
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

**सम्पादक**
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

**सह-सपादक**
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

**सदस्यता**
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

**विज्ञापन की दरें**

| | |
|---|---|
| आवरण पृष्ठ २ एवं ३ | ५०० रू. |
| पूर्ण पृष्ठ (अंदर) | ४००रू |
| आधा पृष्ठ (अंदर का) | २५० रू. |
| चौथाई पृष्ठ | १५० रू |

## अनुक्रमणिका


| क्र. | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| | संपादकीय | 4 |
| | शास्त्रार्थ विषयक अन्य ग्रंथ | 6 |
| | आत्मा को खोजों भाई ! | 8 |
| | महर्षि देव दयानन्द | 10 |
| | यज्ञ | 11 |
| | सत्संग | 15 |
| | मेरी आस्ट्रेलिया यात्रा | 17 |
| | सिंहस्थ मेले में आर्य समाज पाण्डाल का भव्य उद्घाटन सम्पन्न | 19 |
| | वैदिक धर्म प्रचार का महत्त्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ | 23 |
| | सिंहस्थ महापर्व 2016 | 24 |


## मई माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

| | |
|---|---|
| 1 | श्रमिक दिवस |
| 3 | ब्रह्मचार्य जयंती, प्रेस स्वतंत्रता दिवस |
| 7 | गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती, गुरु अंगददेव जयंती |
| 8 | शिवाजी महाराज जयंती |
| 9 | भगवान परशुराम जयंती |
| 11 | संत सूरदास जयंती, आद्य शंकराचार्य जयंती |
| 15 | जानकी जयंती, केवट जयंती |
| 17 | रानी अहिल्याबाई होल्कर जयंती |
| 21 | बुद्धपूर्णिमा, राजीव गांधी पुण्यतिथि |
| 22 | राजा राममोहन राम जयंती |
| 23 | नारद जयंती |
| 27 | पं. जवाहर लाल नेहरू पुण्य तिथि |
| 28 | वीर सावरकर जयंती |
| 31 | धुम्रपान निषेध दिवस |

सम्पादकीय

# धर्म के नाम पर ..............

मानव समाज की सबसे बड़ी क्षति और अव्यवस्था का कारण है, मानव समाज जब किसी अनुचित या असत्य मार्ग पर चलते हुए भी उसे सही और उचित मान्यता प्रदान करने लगता है। यह स्थिति उस समय उपस्थित होती है जब वह किसी विचारधारा के मूल (सत्य स्वरूप) से कट जाता है। मूल से कट जाने के पश्चात उसके समक्ष अनेक विकल्प उभर कर आ जाते हैं किसी बिन्दु पर सत्य तो एक होता है पर उसीके असत्य विकल्प अनेक हो सकते हैं। फिर जो विकल्प उसे आकर्षित करता है उसी को वह अपना हितैषी मानते हुए उसका अनुगामी बन जाता है।

आज यह स्थिति जीवन के अनेक पहलुओं पर समाज के साथ जुड़ चुकी है। इसका असर और प्रभाव व्यक्तिगत जीवन से लेकर विश्व पर्यन्त दृष्टिगोचर हो रहा है।
जाने अनजाने में यह तो सर्वमान्य है कि धर्म मानव जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है। निश्चित ही यदि यह कहा जावे कि धर्म के बिना मानव जीवन का अस्तित्व ही नहीं है तो यह अतिश्योक्ति नहीं है।

कहा गया "**आहार निद्राभय मैथुनमंच सामान्य मेतदपशुर्भिनराणाम्।**
**धर्मो ही तेषामधिको विशेषो, धर्मेह हीना पशुर्भि समाना।।**

अर्थात् - खाना पीना, भय, सन्तान उत्पत्ति ये सब तो पशु के साथ भी जुड़ा है। फिर मनुष्य व पशु में क्या अन्तर रह गया ? अन्तर है कि धर्म के बिना मानवीय जीवन भी पशुवत होता है। इसलिए धर्म मानवता की पहचान है, बिना धर्माचरण के जीवन पशु तुल्य है।

धर्म जीवन का मार्गदर्शक है, हर कदम पर हमारा सही मार्ग प्रशस्त करता है। एक प्रकार से धर्म समस्त विश्व का संविधान है। जिस प्रकार किसी राष्ट्र को व्यवस्थित, सुरक्षित रखने के लिए उसका अपना संविधान होता है, जिसके अन्तर्गत उस राज्य में निवास करने वालों की जीवन शैली, उनके अधिकारों, उनके कर्तव्यों के प्रति उनको सजग किया जाता है। ठीक इसी प्रकार यह समस्त संसार उस परमपिता सर्वशक्तिमान ईश्वर का राज्य है, उसकी व्यवस्था में ही सबकुछ चलता है इसका कोई विकल्प भी नहीं है।

इसलिए सृष्टि के प्रारंभ में ही परमपिता परमात्मा ने विश्व के सभी मानवों के लिए एक संविधान (Constitution) दिया और वह हमें जीवन को श्रेष्ठ, सुगम और सुखी जीवन जीने का मार्गदर्शन देता है। यह संविधान वेद के रूप में हमें प्राप्त हुआ। चूंकि यह (वेद) ईश्वर प्रदत्त है इसलिए ये सबके लिए, सदा के लिए, सनातन है। परमपिता परमात्मा ने इस संविधान के द्वारा हमें अपने अधिकार व कर्तव्यों व उपलब्धियों के प्रति सन्देश दिया। जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व की सुरक्षा और उन्नति का साथ ही जल थल नभ में छिपे अनमोल खजाने और आश्चर्यजनक संरचना का बोध कराया। ज्ञान, विज्ञान, शास्त्र, संगीत, स्वास्थ्य, परिवार दोनों लोकों के संबंध में समस्त ज्ञान दिया। धर्म का स्त्रोत ईश्वरीय ज्ञान वेद है, धर्म ही मानवता का सन्देश देते हुए व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की सुरक्षा सुख, शान्ति, समृद्धि, संगठन का एकमात्र आधार है। धर्म ही हमें अधिकारों और अपने कर्तव्यों का बोध कराता है, धर्म ही हमारा रक्षक है।

**धर्म एव हथो हन्ती धर्मो रक्षति रक्षितः।**
**तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोबधीत।।**

अर्थात् धर्म ही रक्षक है, धर्म रक्षा से हमारी रक्षा है, मरा हुआ धर्म तो हमें भी मार देता है।

आज धर्म की चर्चा और प्रदर्शन चरम सीमा पर है जिधर देखो उधर धार्मिक आयोजनों की बाढ़ आ गयी है, गली मोहल्लों से लेकर मीडिया के माध्यम से सारे संसार में धर्म प्रचार देखा जा रहा है। धर्मोपदेशक, धार्मिक स्थल, धार्मिक आयोजन सब बहुत बड़ी संख्या में देखे जा सकते हैं। इनका विस्तार आज भी निरन्तर हो रहा है। कहां तक होगा इसकी कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती। धर्म का यह प्रचार प्रसार विगत 3 से 4 दशक में बहुत बढ़ा है।

धर्म का प्रभाव सुख, शान्ति, नैतिकता, अहिंसा, संगठन, निर्भयता, सद्भाव, सदचरित्र होता है। थोड़ा विचार करें लगभग 30 से 40 वर्ष पूर्व इतना प्रचार प्रसार, उपदेश, कथा, भण्डारे, जगराते, समाज में नहीं होते थे। सोचकर देखिये तब मनुष्य का जीवन सुख, शान्ति, सुरक्षा, प्रेम से निकट अधिक था या आज का ? पहले का आदमी निर्भय था या आज का ? पहले के व्यक्ति पर अधिक विश्वास किया जा सकता था या आज के ? समाज की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करने पर पायेंगे कि जब धर्म का इतना प्रचार नहीं था तब का समाज आजकी अपेक्षा अधिक सुखी, सुरक्षित, शान्त, संगठित, विश्वसनीय था। आज चारों ओर चिन्ता, भय, अशान्ति असुरक्षा, हिंसा अकाल का वातावरण छाया हुआ है।

फिर धर्म के नाम पर यह स्थिति तो धर्म के परिणामों के विपरीत है ? क्या कारण है इसका ? क्यों ये सबकुछ घटित हो रहा है ? कैसे इसे नियन्त्रित किया जा सकता है ? यह आश्चर्य है कि इस ज्वलन्त समस्या पर आज विश्व समाज सोच ही नहीं रहा है। किन्तु इस पर नियन्त्रण यदि पाया जा सकता है तो इसका एकमात्र उपाय धर्म है।

आज धर्म के मूल से भटका हुआ समाज धर्म को तो मानता है किन्तु वह उसके सत्य स्वरूप को जानता नहीं, उसे कैसे अपनाए वह भी जानता नहीं है। धर्म को उसने बाहरी आवरणों तिलक, कपड़े, माला, कण्ठी मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे या स्थान विशेष को तीर्थ मानकर मान्यता दे रखी है। वह इन सब भौतिक साधनों को ही धर्म मान बैठा है इसलिए धर्म के मूल से भटक कर धर्म के अनुसरण से और उसकी के प्रभाव से दर्शन से दूर हो रहा है। इसका परिणाम ही है कि आजका समाज विपरीत कष्टमयी परिस्थितियों में जीवन बिता रहा है।

आज प्रायः जो देखने, सुनने में आता है वह धर्म के आवरण में धर्म के नाम पर होता दिखाई दे रहा है जिसका लाभ वह कभी नहीं हो सकता जो धर्म से होना चाहिए। वास्तव में धर्म बाहरी आडम्बर या दिखावा का नहीं है। इसने तो बाहरी वस्तुएं, स्थान, पंथ और तथाकथित मानवीय विचारधाराओं को ही धर्म का स्थान दे दिया है इसलिए आज धर्म के विपरीत परिणाम भोग रहे हैं।

धर्म एक जीवन शैली है जिसमें धैर्यता, सत्यता, अहिंसा, इन्द्रीय नियन्त्रण, क्षमाशीलता, पवित्रता, सत्यज्ञान, क्रोध का त्याग, संयमी जीवन ये उसके लक्षण हैं इन्हें बाहरी दिखावे से नहीं जीवन शैली में उतारने से धर्म पालन होता है। धर्म जीवन का आन्तरिक विषय है जिसके गुणों को आत्मसात करना होता है, उसी के अनुसार जीवन ढालना पड़ता है इसके लिए आडम्बर की जरूरत नहीं, बाहरी आडम्बर शरीर को कष्ट पहुंचाकर तप का दिखावा, शरीर पर केश बढ़ाना या बिलकुल न रखना, गांजा भांग, चरस बुद्धि व शरीर को नष्ट करने वाले साधनों का उपयोग एक छलावा, अज्ञानता, अन्धविश्वास है। यह सब धर्म के लिए नहीं धर्म के नाम पर हो रहा है और अज्ञानी अन्धश्रद्धा से पूर्ण लाखों भक्त इनके प्रभाव से प्रभावित हो रहे हैं। बड़े बड़े आयोजनों में धर्म प्रचारक तथाकथित साधु सन्त दिखावे बाहरी सजधज से अथवा सुख, सुविधा, मनोरंजन के साधनों से धर्म का प्रचार कर रहे हैं। इससे भीड़ तो एकत्रित हो जाती है किन्तु धर्म का सही उपदेश जीवन रक्षक और जीवन उन्नति का सन्देश वहां से नहीं दिखाई देता।

धर्म के नाम पर अन्धविश्वास के कारण जीव हत्या, शराब, नशीले पदार्थों का सेवन धर्म के साथ जुड़ गया। इतना ही नहीं यही परम्परा स्त्री सम्मान व हिंसा तक बढ़ गई, आज जौहर जैसा शर्मनाक मानवता विरोधी कृत्य भी धर्म के नाम पर हो रहा है। इस प्रकार धर्म को पहले जाने फिर माने, तब सबकुछ व्यवस्थित हो सकता है। अन्यथा धर्म के नाम पर अधर्म को मान्यता देने से विनाश के कगार पर हम पहुंच जायेंगे।

धर्म के नाम पर बड़ी बड़ी कम्पनियों के समान व्यक्तिगत प्रचार और बाहरी दिखावे आकर्षण का केन्द्र बनते जा रहा है। सिंहस्थ जैसे आयोजन में सत्य सनातन धर्म के गूढ़ रहस्यों, सफल जीवन पद्धति का मार्गदर्शन, व्यक्ति को आध्यात्म, समाज व राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा मिले ऐसे प्रवचन–व्याख्यान और प्रदर्शन होना चाहिए। इतनी बड़ी संख्या में एकत्रित जन समूह के माध्यम से एक अच्छा सन्देश समाज को पहुंचना चाहिए। किन्तु खेद है इन महत्वपूर्ण बिन्दुओं की उपेक्षा करते हुए दिखावा व दर्शन विहीन प्रदर्शन की स्थिति प्रायः देखी जा रही है। इसे शक्ति, सम्पत्ति, समय का सदुपयोग नहीं कहा जा सकता। इसका एकमात्र कारण है धर्म के नाम पर भटका हुआ समाज।

महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय :

# शास्त्रार्थ विषयक अन्य ग्रंथ

प्रश्न 1 : महर्षि दयानन्द ने तो अपने जीवन में अनेक बार और अनेक स्थानो पर शास्त्रार्थ किये थे, परन्तु यहां तो केवल दो शास्त्रार्थों से संबंधित पुस्तकों का ही उल्लेख है – 1. काशी शास्त्रार्थ, और 2. सत्यधर्म–विचार (मेला चाँदापुर)। क्या अन्य शास्त्रार्थों से संबंधित पुस्तकें नहीं मिलती ?

उत्तर : यह सत्य है कि महर्षि ने अपने जीवन काल में अनेक शास्त्रार्थ किये और वे शास्त्रार्थ के लिखित रूप को अधिक महत्व भी देते थे। उपरिलिखित दो शास्त्रार्थ ही अत्यधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण थे। इनके अतिरिक्त जिन महत्वपूर्ण शास्त्रार्थों का लिखित रूप में प्रकाशन हुआ है, उनका अति संक्षिप्त परिचय यहाँ लिखित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है

1– प्रश्नोत्तर **हलधर** (मूल्य – एक आना, शायद कानपुर शास्त्रार्थ से संबंधित)

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी – पं. हलधर ओझा

स्थान – दो शास्त्रार्थ 1. फर्रूखाबाद 2. कानपुर

समय – 1. संवत् 1926, ज्येष्ठ शुक्ल 10–11 (19–20 जून, 1869ई.)
2. संवत् 1926, श्रावण कृष्ण 8 (31 जुलाई 1869 ई.)

भाषा – संस्कृत

प्रकाशन– **"फर्रूखाबाद का इतिहास"** नामक ग्रंथ में (हिन्दी भाषा में)

2. **हुगली शास्त्रार्थ**

| | |
|---|---|
| प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी | : पं. ताराचरण तर्करत्न (काशी नरेश की राजसभा के प्रतिष्ठित पण्डित) |
| स्थान | : हुगली |
| समय | : संवत् 1930, चैत्र शुक्ल 11, मंगलवार (8 अप्रैल सन् 1873 ई.) |
| भाषा | : शास्त्रार्थ संस्कृत में |
| प्रकाशन | : आर्य भाषा (संवत् 1930 में) और बंगला भाषा में अनुदित 'लाईट प्रेस बनारस' में |
| पुस्तक का नाम | : प्रतिमा पूजन विचार |

## 3. जालन्धर शास्त्रार्थ

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी : मौलवी अहमद हुसैन (उर्फ वली मुहम्मद तफज़्खी)

स्थान : जालन्धर

समय : संवत् 1934, अश्विन बदी 2

(24 सितम्बर, 1877 सोमवार, प्रातः 7 बजे)

प्रकाशन : 'पंजाबी पेरा' 'आर्य दर्पण' और 'वज़ीरे हिन्द' में क्रमशः तीन बार छपा और पश्चात लाहौर एवं अमृतसर आर्य समाज ने हिन्दी भाषा में छपवाया।

विषय : पुनर्जन्म और करामात।

पुस्तक का नाम : 'जालन्धर की बहार'

## 4. सत्यासत्य विवेक (बरेली)

प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी : पादरी टी जी स्काट

स्थान : बरेली, राजकीय पुस्तकालय

समय : संवत 1936, भाद्रा सुदी 7 - 9

([illegible]-27 अगस्त सन् 1879)

विषय : पहले दिन -- आवागमन।

दूसरे दिन – ईश्वर कभी देह धारण करता है या नहीं ?

: तीसरे दिन – ईश्वर अपराध क्षमा करता है या नहीं ?

**पुस्तक का नाम : सत्यासत्य विवेक**

प्रकाशन : प्रथम संस्करण -- 1. आर्यभूषण प्रेस, शाहजहाँपुर (मूल्य चार आना) उर्दू भाषा में, सितम्बर 1879

2. श्रीमद्दयानन्द ग्रंथ संग्रह में, आर्यभाषा में, श्री जगतकुमार द्वारा।

3. गोविन्दराम हासानन्द द्वारा पृथक् पुस्तक के आकार में।

4. 'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह' एवं

5. ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन (सं. 2039)

**शेष अगले अंक में ........**

बोध कथा

# आत्मा को खोजों भाई !

बारह यात्री थे। वे एक नगर से दूसरे नगर को जा रहे थे। आगे बढ़े तो एक नदी आ गई। अब सब लोग घबराये कि नदी को कैसे पार करें ? कोई पुल नहीं, नाव नहीं। पार जाना आवश्यक है, कैसे जायें ?

इनमें एक स्याना था। उसने कहा – देखो, घबराओ नहीं, नदी को अवश्य पार करना है। सब लोग एक दूसरे का हाथ पकड़ लो। हम सब मिलकर पार हो जायेंगे।

सबने ऐसा ही किया। दृढ़ता से हाथ पकड़ लिये। प्रयत्न करके पार हो गये। किनारे पर पहुंचे तो स्याने व्यक्ति ने कहा – अब गिनती कर लो कि कहीं कोई नदी में तो नहीं रह गया ?

दूसरे ने कहा – सबसे अधिक बुद्धिमान तू ही है, तू ही गिन।

उसने गिनना आरम्भ किया – एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह। स्वयं को उसने गिना ही नहीं। चौंककर बोला – ये तो ग्यारह हैं, एक व्यक्ति कहाँ गया ?

दूसरे ने कहा ठहरो, मैं गिनता हूं। उसने भी अपने आप को छोड़ दिया। कहा – ये तो ग्यारह हैं। तब तीसरे ने गिना। उसने भी अपने आपको नहीं, शेष ग्यारह को ही गिना। चौथे ने गिना, पाँचवे ने गिना। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों ने गिना। किसी ने भी अपने आपको नहीं गिना। सबने ग्यारह ही गिने और लगे रोने कि एक व्यक्ति डूब गया। वे इस प्रकार रो रहे थे कि एक और यात्री उधर से निकला, उसने पूछा, क्या हुआ है भाई ! तुम रोते क्यों हो ?

उन्होंने कहा – हम बारह थे। नदी को पार करते हुए एक व्यक्ति डूब गया। अब ग्यारह शेष रह गये हैं, इसलिए रोते हैं।

उस व्यक्ति ने एक दृष्टि में उन्हें देखा कि ये तो बारह हैं। तब बोला – देखो ! यदि मैं तुम्हारे बारहवें साथी को खोज दूं तो ?

वे बोले – तब तो हम तुम्हें भगवान मान लेंगे।

उसने कहा – बहुत अच्छा। सब बैठ जाओ। मैं प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर चपत मारूंगा। जिसे पहली चपत लगे, वह कहे एक, जिसे दूसरी लगे, वह कहे दो। इस प्रकार सब बोलते जाओ।

वे सब बैठ गये। उस यात्री ने पहले व्यक्ति के मुख पर चपत मारकर कहा एक। पहले ने कहा हाँ एक। दूसरे ने कहा हाँ दो। इसी प्रकार उसने तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह सब गिन डाले। अन्तिम यात्री ने कहा–हाँ बारह। और सब प्रसन्न हो गये कि उनका बारहवाँ साथी मिल गया। सबने चपत मारने वाले को कहा – तू तो वस्तुतः भगवान है।

आपको इन यात्रियों की मूर्खता पर हँसी आती है, परन्तु सोचकर देखो, हम स्वयं क्या कर रहे हैं ? हम बारह यात्री चले थे जीवन की इस यात्रा पर पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां, ग्यारहवां मन और बारहवॉ आत्मा। हमने आत्मा को भुला दिया। ग्यारह ही ग्यारह दिखाई देते हैं। बारहवां दृष्टिगोचर नहीं होता। इन ग्यारह के लिए हम सब कुछ करते है। प्रातः से सायं तक, सायं से प्रातःकाल तक परिश्रम करते हैं। आत्मा के लिए कुछ भी नहीं करते। इन ग्यारह को हम प्रत्येक [illegible] का भोजन देते हैं। आत्मा को हमने भूखा बैठा रखा है। आज आत्मा की भूख [illegible] मनुष्य [illegible] है, [illegible] शान्ति नहीं मिलती।

महर्षि दयानन्द की जीवनी [illegible]

## राजा जयचन्द जी की भेंट

अनूप शहर में सबसे पहले राजा जयकृष्ण ने स्वामी जी के दर्शन किये थे और एक रात स्वामी जी के पास रहे थे। उन दिनो सैय्यद मुहम्मद वहां के तहसीलदार थे। वे अरबी फारसी के अच्छे विद्वान थे। नित्य प्रति स्वामीजी के पास आया करते थे। स्वामी जी विद्वता व माधुर्य से प्रभावित स्वामीजी के भक्तों में उनकी भी गिनती थी। किन्तु स्वामीजी के उपदेशों से कुछ लोग चिढ गये थे जिससे वे लोग स्वामी जी को अनेक यातनाओं व विघ्न बाधाओं से पीड़ित करने में भी आगा-पीछा नहीं देखते थे। कभी--कभी उस महाबोधि सत्व को समूल नष्ट करने पर भी उद्यत हो जाते थे।

एक दिन एक ब्राह्मण ने स्वामी जी को नमस्कार करके पान भेंट किया। स्वामीजी ने सहज, स्वभाव से पान लेकर खा लिया। पान का रस चखते ही जान गये कि इसमें विष है। स्वामी जी को विष देने की बात छिप नहीं सकी। तहसीलदार साहब ने उस पापी को पकड़ लिया। उसने स्वामी जी के पास जाकर सारी बात कही। स्वामीजी ने उसे देखकर दृष्टि हटा ली। फिर बोले – मैं किसी को बन्धन में डालने नहीं बल्कि छुड़वाने आया हूं। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ सकता तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ दें। उसने आज तक क्षमा का ऐसा धनी नहीं देखा था।

**प्राणायाम में शक्ति**

बदायू के कलेक्टर अपने मित्र के साथ गंगा तट पर शिकार के लिए आये। वहां उन्होंने योगस्थ एक सन्यासी को ध्यानमग्न देखा। कलेक्टर स्वामीजी के पास पहुंचा और उन्हें उस शीत में नग्न शरीर बालू पर बैठे देखा। समाधि खुलने पर स्वामीजी ने देखा, कलेक्टर साहब बोले कि इतनी सर्दी में नग्न बदन ठण्डी हवा कोपी न पहने बैठा है। क्या आपको शीत नहीं लगती। स्वामीजी ने उत्तर दिया कि आपके मुंह को शीत क्यों नहीं लगती है। केवल अभ्यास ही कारण है। दूसरे स्वामीजी ने प्राणायाम करके पसीना निकाला। कलेक्टर साहब स्वामीजी से बहुत प्रभावित हुए और नमस्कार करके चले गये।

# महर्षि देव दयानन्द

महर्षि देव दयानन्द वैदिक संस्कृति के महास्तंभ थे
अंधकार से घिरे सनातन धर्म के समारंभ थे
दिनकर की किरणों सा वेद ज्ञान प्रकटाया
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
महर्षि ने [illegible] छुआछूत की [illegible] नारी को सबल बनाया
[illegible] सब साधन है इसे पढ़ने का अधिकार सबको दिलाया
[illegible] प्राणघाती उसे भी अभयदान देकर बचाया
शरण में आये बुरे लोगों को भी सदचरित्र बनाया
महर्षि ने नारी को मान दिया सम्मान के काबिल बनाया
पहले अबला थी उसे सबला का अधिकार दिलाया
नहीं दूर है ऋषि वे आज भी हमारे साथ है
गाकर देखो वेद ऋचाएं वे हरपल हमारे साथ है।

— **द्रोणाचार्य दुबे**
कोदरिया, महू

**कः कालः कानि मित्राणि को देशः को व्ययेगमौ ।**
**कश्चाहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहु मुर्हुः ।।**

अर्थ — समय कौन सा है, मेरे मित्र कौन व कैसे है देश कौन सा है, क्या मेरी आय क्या मेरा व्यय है मैं क्या हूँ मेरी शक्ति क्या है इन बातो को बार बार चिन्तन कर बढ़ाना चाहिए। इन बातो को जीवन में धारण करके आगे बढ़ना ही एक श्रेष्ठ मनुष्य जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। बिना विचार किए किसी कार्य को करना या मानना ठीक नहीं।

# यज्ञ

— आचार्य ज्ञानेश्वार्य, रोजड़

प्रश्न 279 : यज्ञ किसे कहते हैं ? यज्ञ की परिभाषा क्या है ?

उत्तर : यज्ञ का सामान्य अर्थ है दान देना, त्याग करना तथा वस्तुओं का ठीक ठीक उपयोग लेना।

प्रश्न 280 : यज्ञ कुण्ड विशेष आकार का ही क्यों बनाया जाता है, किसी भी पात्र में यज्ञ क्यों नहीं होता ?

उत्तर : विशेष प्रकार के यज्ञ कुण्ड में अग्नि का तापमान अधिक बनता है तथा घी और सामग्री शीघ्रता से जलते हैं और अति सूक्ष्म आकार लेते हैं।

प्रश्न 281 : यज्ञ के लिए समिधायें (लकड़ी) पीपल, बरगद, आम, गूलर आदि कुछ विशेष वृक्षों की ही क्यों प्रयोग की जाती है ? किसी भी वृक्ष की लकड़ी से यज्ञ करने में क्या हानि है ?

उत्तर : पीपल, आम आदि विशेष समिधाओं के जलाने से कार्बन डाई ऑक्साइड आदि हानिकारक गैसें बहुत कम बनती हैं और कोयले व राख भी कम बनते हैं।

प्रश्न 282 : यज्ञ में गाय के घी का ही प्रयोग क्यों होता है ? भैंस, बकरी, ऊंटनी का या वनस्पति घी या तेल का प्रयोग क्यों नहीं होता ?

उत्तर : क्योंकि गाय के घी को जलाने से विशेष गैसें बनती हैं जो आकाश में स्थित प्रदूषण को शीघ्र ही अधिक मात्रा में नष्ट कर देती हैं। अन्य किसी घी या तेल में यह शक्ति नहीं होती है।

प्रश्न 283 : यज्ञ सूर्योदय के पश्चात तथा सायं सूर्यास्त से पूर्व ही क्यों करते है रात्रि में यज्ञ क्यों नहीं करना चाहिये ?

उत्तर : सूर्य की किरणें यज्ञ द्वारा उत्पन्न विशेष रोग विनाशक गैसों को ऊपर आकाश में ले जाकर फैला देती हैं, यह कार्य रात में नहीं हो सकता है।

प्रश्न 284 : यज्ञ करने से पूर्व आचमन व अंग स्पर्श (जल से) क्यों करते हैं ?

उत्तर : जल का आचमन करने से शरीर में पवित्रता होती है तथा पवित्र विचार भी उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 285 : यज्ञ एक भौतिक क्रिया है तो इसमें मन्त्रों का उच्चारण क्यों किया जाता है ?

उत्तर : मन्त्रों के बोलने से यज्ञ के लाभों, परिणामों, प्रभावों का पता चलता है तथा मन्त्रों पर विचार करने से आत्मा में शुद्धता आती है।

प्रश्न 286 : क्या यज्ञ करने से जो धुंआ उत्पन्न होता है उससे वायु प्रदूषण नहीं होता है ?

उत्तर : यज्ञ से थोड़ा सा प्रदूषण हो सकता है किन्तु यज्ञ द्वारा निर्मित विशेष वायु अनेक प्रकार के रोगों के कीटाणुओं का नाश करती है।

प्रश्न 287 : यज्ञ में घी के साथ सामग्री (जड़ी बूटियों) की भी आहुति क्यों दी जाती है?
उत्तर : सामग्री जलाने से अलग लाभ होते हैं तथा घी जलाने से अलग लाभ होते हैं।
प्रश्न 288 : यज्ञ की सामग्री में क्या–क्या पदार्थ होते हैं ?
उत्तर : यज्ञ की सामग्री में मुख्य रूप से सुगन्धित, रोगनाशक, पुष्टिकारक तथा मधुर पदार्थ होते हैं।
प्रश्न 289 : 'स्वाहा' शब्द का अर्थ क्या है ?
उत्तर : स्वाहा शब्द के निम्न अर्थ होते हैं –

1. सत्य बोलना 2. मधुर बोलना 3. अपनी वस्तु को अपनी कहना 4. जैसा मन में हो वैसा ही वाणी से बोलना तथा कर्म करना, 5. परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व आहुत करने की योग्यता बनाना तथा 6. घी, सामग्री को अग्नि में डालना।

प्रश्न 290 : तीन समिधाओं को विशेष रूप से घी में डुबोकर क्यों आहुति दी जाती है?
उत्तर : समिधाओं को घी में डुबोकर जलाने से वे शीघ्र जलती हैं।
प्रश्न 291 : क्या यज्ञ से आध्यात्मिक–मानसिक लाभ भी होते हैं ?
उत्तर : हाँ, यज्ञ करने से शारीरिक स्वास्थ्य लाभ, त्याग की भावना, प्रसन्नता, पवित्रता आदि गुणों की प्राप्ति होती है।
प्रश्न 292 : यज्ञ करते समय घी की आहुति कभी उत्तर भाग में कभी दक्षिण में कभी मध्य में देते हैं ऐसा क्यों किया जाता है ?
उत्तर : ऐसा इसलिए किया जाता है कि जिससे सभी समिधाओं पर समान रूप से घी पड़े तथा वे ठीक प्रकार से जल जाएँ।
प्रश्न 293 : क्या यज्ञ करना सबके लिए अनिवार्य है ?
उत्तर : शास्त्रों में यज्ञ करना सबके लिए अनिवार्य बताया गया है, चाहे थोड़ा करें या अधिक करें।
प्रश्न 294 : यज्ञ में, हवन में, अग्निहोत्र में, होम में क्या भेद हैं ?
उत्तर : अग्निहोत्र का अर्थ है हवन कुण्ड में घृत सामग्री जलाना। हवन और होम, अग्निहोत्र के ही पर्यायवाची शब्द हैं किन्तु यज्ञ शब्द का अर्थ विस्तृत है, जिसका अर्थ है ईश्वर की आज्ञा के अनुसार प्रत्येक शुभ कार्य को निष्काम भावना से पुरुषार्थ, त्याग, तपस्या पूर्वक करना, जिससे परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व को सुख, शान्ति, समृद्धि की प्राप्ति हो।
प्रश्न 295 : क्या यज्ञ करने का अधिकार केवल ब्राह्मण को ही होता है या कोई भी व्यक्ति यज्ञ कर सकता है ?
उत्तर : यज्ञ करने का अधिकार सभी मनुष्यों को हैं। केवल ब्राह्मणों को ही नहीं है।

क्रमशः .....

निबन्ध

परिभाषा – रचयिता प्रकाश आर्य, महू

राज और नीति का खेल,
स्वार्थी विचारों का मेल।
कुर्सी इसका आधार है,
भाड़यन्त्र भरमार है।।
जादू जिसका चहुंओर चल रहा,
शरण में, भ्रष्टाचार पल रहा।
अत्याचारों से कुण्ठित हुई मानव अभिलाषा,
लेटेस्ट राजनीति की है, ये परिभाषा।।

लक्षण –

गाजर घास–सी,
बे–लगाम बढ़ती जा रही।
सारी व्यवस्थाऐ,
इसके कहर से चरमरा रही।।
दुनिया के हर क्षेत्र में सबसे भारी है,
हस्तियां नतमस्तक सारी है।
नशा इसका जिस पर चढा फिर उतरा नहीं,
दलदल में जो इसके फंसा, वो कभी निकला नहीं।।

लाभ –

बेरोजगारों का बनी सहारा,
जाने कितनों का, भाग्य संवारा।
बिना कमाए लक्ष्मी का सानिध्य पाते हैं,
राजनीति की शरण जो आते हैं।।
सेवा के नाम पर बनी व्यापार,
निरन्तर बढ़ने के हैं आसार।
बिना भेदभाव सबको ये अपना लेती है;
असमाजिक तत्वों को भी आश्रय देती है।
इसीलिए दो नम्बरी, चार नम्बरी,
सभी शरण आते है
कानून के डण्डे से साफ बच जाते हैं।
राजनीति पारस पत्थर है,
सबको स्वर्णिम अवसर देती है।
हो जाए मेहरबानी तो,
सारे कष्ट हर लेती है।।
ज्ञान व शिक्षा का भेदभाव भी मिट जाता है,
चौथी पास को आई. ए. एस. सैल्यूट लगाता है।
एक नहीं, दो नहीं जन्मों की सुविधा दे देती है।
नेता के बच्चों की तो, पूरा देश ही खेती है।।

हानि –

लुटा रही सबकुछ, पतन का बनी द्वार।
चोरी, गुण्डागर्दी, फैलाती भ्रष्टाचार।।
ज्ञानी ध्यानी लुप्त हुए,
नेता ही सर्वज्ञ हुए।
जाति, भाषा प्रान्त का,
जहर नित फैला रही।
देश को कर खोखला,
दीमक जैसा खा रही।।
कुर्सी ने प्राणों से बढ़कर इसमें स्थान पाया है।
कुर्सी की खातिर देश, दांव पर लगाया है।।

**उपसंहार**

मेरे मत मे राजनीति का, ये स्वरूप अभिशाप है।
ऐसी नीति को देना आश्रय, सबसे बड़ा पाप है।।
इसके अतीत को देखकर, परिवर्तन जरूरी है।
जो मिली आजादी, आज भी अधूरी है।।
दुष्ट, चापलूस, बहुरूपियों को, बढ़ाना देश हत्या है।
शहीदों के बलिदानों पर सरेआम बट्टा है।।
इसलिए –
देश के प्रबुद्ध नागरिक, इससे न करें पलायन।
शोधन करें इसका, साफ करें, दमन।।
ऐसे जयचन्दी राष्ट्र भक्तों को, जो सदा बरा रहे हैं,
राजनीति की आड़ में, देश को डस रहे हैं।
उनका सम्मान करना छोड़ें,
स्वार्थ में उनसे सम्बन्ध, कदापि न जोड़ें।।
करें उनका सामाजिक बहिष्कार,
तभी होगा इसका उद्धार।
नेता पाठ पढ़ें त्याग का, सेवाभाव का,
दुरूपयोग न करें कोई, कुर्सी के प्रभाव का।
चरित्रवानों को आगे लावें
लाल–बाल–पाल का चरित्र पढ़ावें।।
इसलिए देश के प्रबुद्ध, तथाकथित, पढ़े- लिखे,
नागरिक विशेष ध्यान दें।
स्वार्थ छोड़ देश को भी, सम्मान दें।।
यदि ऐसा हुआ तो, अभिशप्त राजनीति वरदान बनेगी।
फिर दिल में किसी के, ये कमी न खलेगी।।

**प्रिय पाठकवृन्द,**

वैदिक रवि आपका अपनी [illegible] है। प्रयास किया जा रहा है कि यह [illegible] [illegible] बने। [illegible] [illegible] [illegible]

विशेष–[illegible] किया जा रहा है कि पत्रिका का [illegible] बने। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, [illegible] कविता [illegible] कृपया इस ओर ध्यान देवें।

# सत्संग

जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना है। मोक्ष का अर्थ मुक्ति, मुक्ति किससे किसकी ? मुक्ति दुःखों से, कष्टों से। जब मनुष्य अज्ञान, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश के बन्धनों से मुक्त हो जाता है, तब वह दुःखों से मुक्त हो जाता है। इस हेतु मोक्ष तक पहुंचने का मार्ग ढूंढना होगा।

मार्ग भी सत्य पर आधारित हो, भ्रमित करने वाला न हो, ऐसा न हो कि जाना कहीं हो और पहुंचा कहीं और दे, यह नहीं होना चाहिए।

यह मार्ग स्वाध्याय व सत्संग से प्राप्त होगा।

सत्संग का अर्थ सत्य का जहां संग हो जाए, और असत्य से छूट जावे।

इसलिए सत्संग का बड़ा महत्व बताया है –

**सत्संग परम् तीर्थ, सत्संग पर पदम्।**
**तस्मात् सर्व परित्यज्य, सतसंग सततं कुरू।।**

श्लोक की पहली पंक्ति में सत्संग को तीर्थ कहा गया – इस तीर्थ का अर्थ भी जीवन को उन्नति प्रदान करने वाला कहा गया।

**जनः येन तरति तत् तीर्थम्।**

जीवन जिससे तर जावे, किससे तर जावे दुःखों से, अज्ञान से भव सागर से तर जावे। तर जावे अर्थात् पार हो जावे, नदी में पथिक जब उसे पार कर लेता है तो उसे तरना और पार न कर पाए तो डूबना कहते हैं।

यह संसार अनेक प्रकार की व्यवस्था, विपदा और सुखों से अनेकर प्रकार की क्रिया कलापों से भरा है, कहीं समतल भूमि है तो कहीं ऊंचे–नीचे पहाड़, कहीं सीधा मार्ग है तो कहीं टेढ़ी मेढ़ी कटीली झाड़ियों से भरा कंटकाकीर्ण मार्ग भी है। इस प्रकार के विचित्र संसार को सुगमता, सरलता और सफलता से पार करने का मार्ग तीर्थ हमें दिखलाता है।

तीर्थ की परिभाषा करते हुए कहा गया है –

"सत्य तीर्थ, क्षमा तीर्थ, तीर्थमिन्द्रिय निग्रहः। सर्व भूत दया तीर्थ तीर्थं मार्जवमेवच, ज्ञानं तीर्थं तपस्तीर्थं कथितं तीर्थं सप्तकम्।।"

उपरोक्त [illegible] सत्य, क्षमा, [illegible], दया, [illegible], ज्ञान, तपस्या को जीवन में आत्मसात करना तीर्थ स्नान है। इस प्रकार उक्त ज्ञानमय बातों का जीवन में जो धारण करता है, उन्हें अपने व्यवहार में आत्मसात करता है, वही तीर्थ स्नान करता है।

मात्र जल स्नान को तीर्थ नहीं मानना चाहिए, जल से तो शरीर शुद्ध होता है, आत्मा की शुद्धत जल से नहीं आत्मः की शुद्धता विद्या और तप से होती है। मनु महाराज लिखते हैं –

**अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति, विद्या तपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।**

स्वामी शंकराचार्य ने भी लिखा –

**तीर्थेषु पशुयज्ञेसु काष्ठ पाषाण मृण्मये प्रतिमायां मनोयेषां ते नरः मूढ़ चेतसः।**

जल तीर्थ को ही जीवन उन्नति का आधार मानना अज्ञानता है।

सत्य ज्ञान, सत्य विवेक सत्य विचारों का सृजन सत्संग से होता है। सत्संग जीवन का नवनीत है; जिसे पाकर जीवन सफल होता है। सत्संग में ज्ञान का प्रकाश और अज्ञान का शमन होता है। किन्तु मात्र भावनाओं के आधार पर कोरी श्रद्धा से सत्संग में सम्मिलित होना लाभकारी नहीं होगा। इसका लाभ तभी होगा जब सत्संग ज्ञान वर्धक, सत्यता से पूर्ण, सर्वहितकारी हो। कहानी, किस्से, मनोरंजक और अज्ञानपूर्ण तथ्यों से होने वाली चर्चा या उपदेश सत्संग नहीं होता है। सत्संग का प्रत्येक क्षण जीवन को सत्य सन्देश देने वाला होना चाहिए, तभी सत्संग का महत्व है।

सत्संग जीवन मुक्ति मोक्ष की राह दिखाता है, कहा गया –

**सत्संगत्वे निसगत्वं, निसंगत्वे, निर्मोहत्वं, निर्मोहत्वें निश्चलत्वं निश्चलत्वे जीवन मुक्तः।।**

अर्थात – सत्संग ही राग, मोह, त्याग व निश्चल भाव का बोध कराकर जीवन को मोक्ष तक ले जाता है।

सत्संग ही जीवन को सम्पन्नता प्रदान कर सकता है, जीवन में धनवान दो प्रकार से होते हैं एक रूपया, पैसा, मकान, जमीन, जायदाद आदि से भौतिक सम्पत्ति एकत्रित करके सम्पन्न होते हैं। दूसरी सम्पदा आत्मिक सम्पदा है, यह सत्य ज्ञान, अनेक ग्रंथों का अनुसरण कर तथा त्याग भाव शुद्धी, दया, सत्यता और समय से प्राप्त होता है। कहा गया – **"बाहुश्रुतं तपस्त्यागः श्रद्धा यज्ञक्रिया क्षमा भावशुद्धि दया सत्यं, संयमाश्चत्म सम्पदाः"**

यह जीवन की अनमोल सम्पदा है, भौतिक सम्पदा तो केवल इस जीवन के लिए ही लाभदायक है, आत्मिक सम्पदा इस लोक और उस लोक दोनों के लिए लाभकारी है। यह सब हमें सत्संग से ही प्राप्त हो सकता है।

**– प्रकाश आर्य, महू**

# मेरी आस्ट्रेलिया यात्रा

वैसे तो भारत के बाहर संगठन के कार्य से अनेक बार जाना हुआ, उसी अवसर पर कभी सत्संग भी होते रहे। किन्तु इस बार आस्ट्रेलिया में धर्म प्रचार की दृष्टि से मुझे आमन्त्रित किया गया था। इस कारण 23 मार्च 2016 को दिल्ली से सिड़नी के लिए वाय एयर रवाना हुआ, 24 मार्च की सुबह 9.30 बजे सिडनी पहुंचा।

सिड़नी में एयरपोर्ट पर श्री योगेश आर्य लेने के लिए आए थे। उनके साथ उनके निवास स्थल पर पहुंचा, वहीं मेरे ठहरने की व्यवस्था बहुत अच्छी और स्वतन्त्र रूप से की गई। 25 मार्च को युवाओं के साथ चर्चा की अलग से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसमें सभी युवाओं (लड़के और लड़कियों) ने भाग लिया। शेनमार्क सभा के प्रधान श्री जगदीश जी साथ में थे। इस चर्चा में अनेक प्रश्न पूछे, कुछ उपदेशात्मक चर्चा भी की।

रात्रि 7 बजे से 9 बजे तक उपदेश का कार्यक्रम शेनमार्क आर्य समाज स्थल पर रखा गया। अच्छी उपस्थिति थी। रैकार्डिंग व माईक व्यवस्था तथा संगत के लिए तबले की व्यवस्था थी।

रात्रि में 2 घण्टे से अधिक कार्यक्रम चला। कार्यक्रम में उपदेश व भजन दोनों की प्रस्तुति हुई। श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया तथा बड़े ध्यान से सुना, बाद में लगभग प्रत्येक व्यक्ति ने आकर भेंट की तथा कार्यक्रम को बहुत अच्छा बताते हुए अभूतपूर्व कहा। (वैसे किसी के द्वारा अपने कार्य की प्रशंसा सुनना प्रत्येक को अच्छा लगता है, इस दृष्टि से मेरे प्रयास से सामान्य जन सन्तुष्ट हैं, आनन्द ले रहे हैं यह तो ठीक लगा, किन्तु साथ ही यह दुःख हुआ कि आर्य समाज में श्रोता व वक्ताओं का स्तर कैसा हो गया। मेरे जैसे साधारण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को अद्भुत और अभूतपूर्व कहकर प्रशंसा करना हमारे स्तर की स्थिति को दर्शाता है। यह मन को दुःखी भी करता रहा।)

दूसरे दिन फिर सायं 7 से 9 उपदेश व भजन हुए, तीसरे दिन रविवार था, प्रातः 10 से 12.30 तक का समय मुझे दिया गया।

उपस्थिति प्रतिदिन की अपेक्षा और अच्छी थी, इन दिनों में भी श्रोताओं की वही भावना व्यक्त होती रही। बहुत सराहा वृद्धजनों ने आशीर्वाद देकर अत्यन्त प्रशंसा की। मुझे लगा कि मेरी योग्यता से बहुत अधिक मूल्यांकन हो रहा है। मन में विचार करता रहा कि क्या वास्तव में मेरा प्रयास ऐसा ही है क्या ? मेरी प्रस्तुति का स्तर ऐसा ही है जो सारे व्यक्ति इतना प्रसन्न हो रहे हैं, बार-बार तारीफ कर रहे हैं ? वैसे मेरे कार्यक्रमों में पहले भी सराहा किन्तु जितना सम्मान व सराहना यहां की, उसकी कल्पना भी मैंने कभी नहीं की थी। मेरे लिए उनका इतना भाव विभोर होना एक सुखद आश्चर्य था, अकल्पनीय था, साथ ही एक चिन्ता भी थी।

किन्तु इतना लाभ अवश्य हुआ, जिससे सदस्यों में एक स्फूर्ति व चेतना का संचार हुआ, आर्य समाज के कार्य को गति मिली, यह मेरा और सभी पदाधिकारियों का मानना रहा।

सिड़नी में ही वैदिक प्रतिनिधि एक अन्य सभा द्वारा भी मेरा कार्यक्रम विशेष रूप से आयोजित किया गया। इसमें आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सनातन धर्मी भी उपस्थित हुए। यहां डेढ़ घण्टे का समय निर्धारित किया गया।

उसी प्रकार यहां भी सभी ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की। कई व्यक्तियों ने पूर्व के तीन दिनों के कार्यक्रम में न आ पाने का अफसोस किया।

इसमें आस्ट्रेलिया विश्व हिन्दू महासभा के प्रमुख डॉ. निहालसिंह जिन्हें आस्ट्रेलिया सरकार ने एक महत्वपूर्ण सम्मानजनक पद से अभिनन्दन किया है, उन्होंने ऐसे कार्यक्रम की आवश्यकता बताते हुए प्रशंसा की एवं आगे पुनः इसी प्रकार बड़े स्तर पर आयोजन करवाने का कहा।

सिडनी की इस प्रचार यात्रा में नवयुवकों की उपस्थिति, पदाधिकारियों की सक्रियता और कार्यक्रम के प्रति भावनाओं से यहां आर्य समाज को गति मिलना निश्चित है। श्री जगदीश जी, योगेशजी, बृजपालसिंहजी, प्रमोद आर्य जी और भी अनेक सहयोगी संलग्न है। पुनः बड़े स्तर पर

आयोजन की रूपरेखा बनाने का निर्णय लिया है। कार्यक्रम का प्रभाव इतना था कि कुछ व्यक्ति सिडनी से काफी दूरी पर स्थित अन्य शहर ब्रिसबेन व मेलबर्न में भी कार्यक्रम सुनने के लिए पहुंचे, यह बड़ा आश्चर्य जनक रहा। दिनांक 1 से 3 अप्रेल का कार्यक्रम ब्रिसबेन में रखा गया था। कार्यक्रम आर्य समाज स्थल पर रखा गया। मेरे ठहरने की व्यवस्था श्री सुकरमपालसिंह जी के निवास पर की। इस परिवार ने एक परिवार के सदस्य के समान ही स्नेह व सम्मान व सुविधाएं प्रदान की, मैं उनका बहुत आभारी हूं। आप आर्य समाज के प्रति समर्पित व सक्रिय व्यक्ति हैं सबको साथ लेकर चलते हैं।

पहला कार्यक्रम सायंकाल 6.30 से 9.30 बजे तक रखा गया। इसमें आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी सम्मिलित हुए, कार्यक्रम हुआ, पहले दिन ही सभी को बहुत अच्छा लगा। यहां तो सिडनी से भी अधिक रिस्पांस मिला। प्रत्येक श्रोता आनन्द विभोर हो रहा था। किन्तु मैं बार- बार सोचता रहा कि मैं ऐसा तो कुछ नहीं कह रहा, या गा रहा हूं जो इतना अच्छा हो जितना ये सब प्रभावित हो रहे हैं। हर व्यक्ति आता और कहता यह पहला कार्यक्रम ऐसा हो रहा है, आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ। कुछ पौराणिक बन्धु पूरे कार्यक्रम में उपस्थित हुए, यह आर्य जनों को विशेष सुखद लग रहा था। कार्यक्रम तीन दिन का था, किन्तु सदस्यों ने विचार करके उसे 5 दिन का करने का मुझसे आग्रह किया, मैंने स्वीकार किया और 1 से 5 अप्रेल तक ब्रिसबेन में कार्यक्रम हुआ। श्रोताओं में आर्य समाज के व गैर आर्य समाजी उपस्थित होते रहे, कुछ नए व्यक्ति आर्य समाज से जुड़ेंगे, उनसे पृथक से चर्चा की गई। सारे श्रोता प्रसन्नता व एकाग्रता से सुनते रहे। प्रधान श्री जे. डी. हरिजी, राजेश जी, मूलचन्दजी, श्री सुकरमपाल जी व अनेक महिलाओं ने यहां तक कहा कि आज तक ऐसा आयोजन नहीं सुना और न कभी रहा हुआ। सभी पुन: कार्यक्रम के आयोजन की योजना बनावेंगे तथा कम से कम 7 से 10 दिन देने का आग्रह किया है। कुछ व्यक्ति मेलबर्न में कार्यक्रम सुनने हेतु आने को कह रहे थे। निश्चित ही प्रचार प्रसार व सही निर्देशन की कमी रही है। उसी का परिणाम है छोटे से कार्यक्रम को भी इतना महत्व दिया जाता है। यह मेरे जैसे व्यक्ति के लिए कल्पना से ऊपर रहा।

**मेलबर्न** –

मेलबर्न में 8 से 10 अप्रेल तक कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम 3 स्थानों पर अलग अलग आयोजित किया गया।

यहां के व्यक्तियों के लिए यह एक अलग प्रकार का प्रचार था। प्राय: कोई भी प्रचारक, वक्ता के रूप में या भजनों की प्रस्तुति के लिए आते रहे। मेरे द्वारा कुछ विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करने के पश्चात उसी से संबंधित भजनों की प्रस्तुति की जाती थी। संभवत: यही जन सामान्य को अच्छा लगा और उन्होंने इसे बहुत ही सराहा।

कार्यक्रम में पौराणिकों की उपस्थिति भी अच्छीखासी होती थी। अपनी सैद्धांतिक चर्चा के साथ ही रामायण, गीता, महाभारत के भी उदाहरण प्रसंग अनुसार प्रस्तुत किए गए, बार–बार सत्य सनातन धर्म की चर्चा होती रही। इससे आर्य समाज के प्रति पौराणिकों का रुझान बढ़ा और / पौराणिक आर्य समाज से जुड़ने के लिए नाम और पता देकर गए। सनातन धर्म, रामायण मण्डल के अनेक सदस्यों ने कार्यक्रम के पश्चात भेंट कर अत्यन्त सराहना व संतुष्टता व्यक्त की। आर्य समाज के सभी सदस्य बहुत उत्साहित दिखे तथा पुन: शीघ्र ऐसा ही आयोजन करने का आग्रह किया।

कार्यक्रम का प्रभाव इतना रहा कि सिडनी निवासी जिन्होंने सिडनी कार्यक्रम में भाग लिया वे मेलबर्न फेयर कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए।

अपने वर्षों के अनुभव व विभिन्न प्रचार कार्यक्रमों को देखने पर इस कार्यक्रम से आस्ट्रेलिया के आर्यजनों का उत्साह और भावी योजना को एक चेतना मिली, यह प्रतीत हुआ। बार–बार भारत की ओर से प्रयास होने पर सनातनधर्मी के एक सुदृढ़ संगठन का निर्माण हो सकता है।

**प्रकाश आर्य**

रागागन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

# सिंहस्थ मेले में आर्य समाज पाण्डाल का भव्य उद्घाटन सम्पन्न

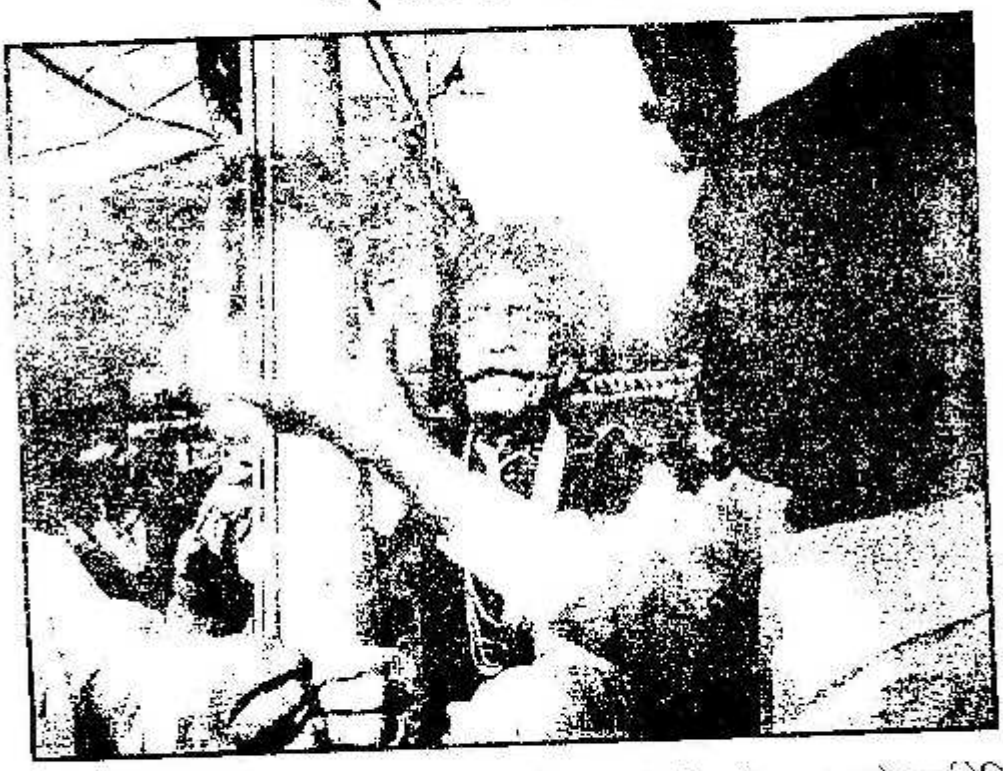

महर्षि दयानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार शिविर के माध्यम से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक माह तक निरन्तर वेद प्रचार का कार्यक्रम का शुभारंभ 21 अप्रेल को हुआ। कार्यक्रम स्थल पर अपार जनसमूह उत्साह के साथ महर्षि दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे का घोष कर रहे थे। प्रसन्नता की बात यह है कि हजारों की भीड़ में नवयुवकों की उपस्थिति अधिक रही।

सायंकाल 4 बजे दानवीर और आर्य समाज के भामाशाह **महाशय धर्मपालजी (एम डी एच)** के कर कमलों से ध्वजारोहण किया गया। ध्वज गीत देहरादून से पधारी कन्या गुरूकुल की छात्राओं ने प्रस्तुत किया, तत्पश्चात मुख्य पाण्डाल में **कार्यक्रम का शुभारंभ सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय सुरेशचन्द्र आर्य, महाशय धर्मपाल जी, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, स्वामी ऋतस्पतिजी, म. प्र. सरकार के शिक्षामन्त्री आदरणीय पारसजी जैन, म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य की उपस्थिति में दी प्रज्वलित कर किया गया।**

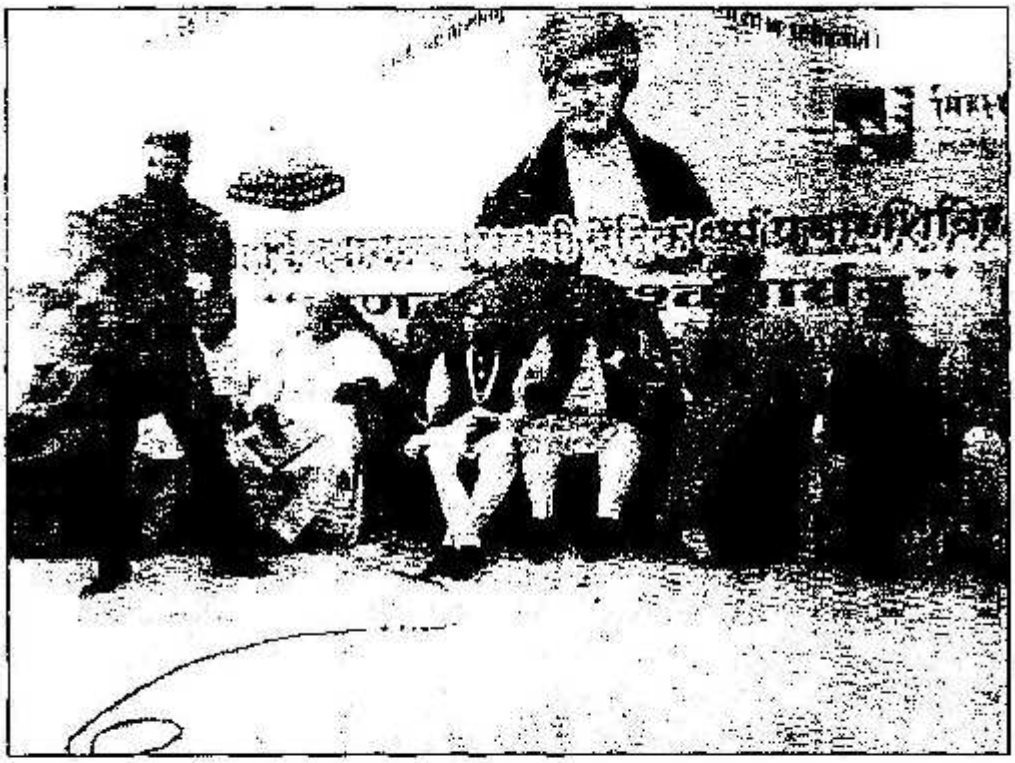

इस अवसर पर आगन्तुक विद्वानों तथा सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने सारगर्भित उद्‌बोधन देकर सिंहरथ की सार्थकता के लिए अधिक से अधिक जन सामान्य तक अपनी विचारधारा पहुंचाने का सन्देश दिया तथा इस महान अवसर पर वैदिक धर्म पताका संगठित होकर जन-जन तक फहराने का संकल्प लेने का प्रस्ताव रखा। इस अवसर पर महाशय धर्मपालजी ने सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रू. के मूल्य पर जन सामान्य को उपलब्ध करवाने व कार्यक्रम सहयोग हेतु **12 लाख रू. दान की घोषणा** की तथा कार्यक्रम से अभिभूत होकर पुनः 4 दिवस तक कार्यक्रम में उपस्थित होने का आश्वासन दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने इस भव्य कार्यक्रम के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया तथा कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध हो इसलिए वैदिक सन्देश और आर्य समाज के सन्देश का अधिक से अधिक प्रचार करने का निवेदन किया. **इस कार्य हेतु 2 लाख रूपए** भी आपने प्रदान किए। कार्यक्रम की भव्यता और विशाल व्यवस्था के प्रति आपने सन्तोष व्यक्त करते हुए आगे भी हर प्रकार से सहायता करने का आश्वासन दिया। इसी अवसर पर श्री शिवकुमार चौधरी, प्रतिभा सिन्थेक्ट लिमि. द्वारा 2,50,000/- की राशि दान दी गई।

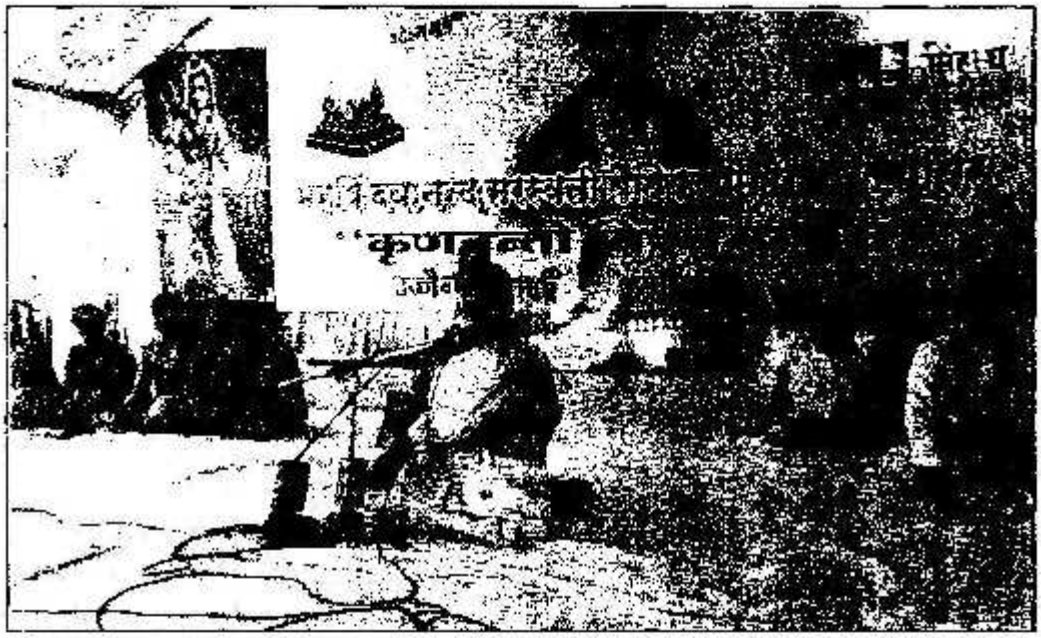

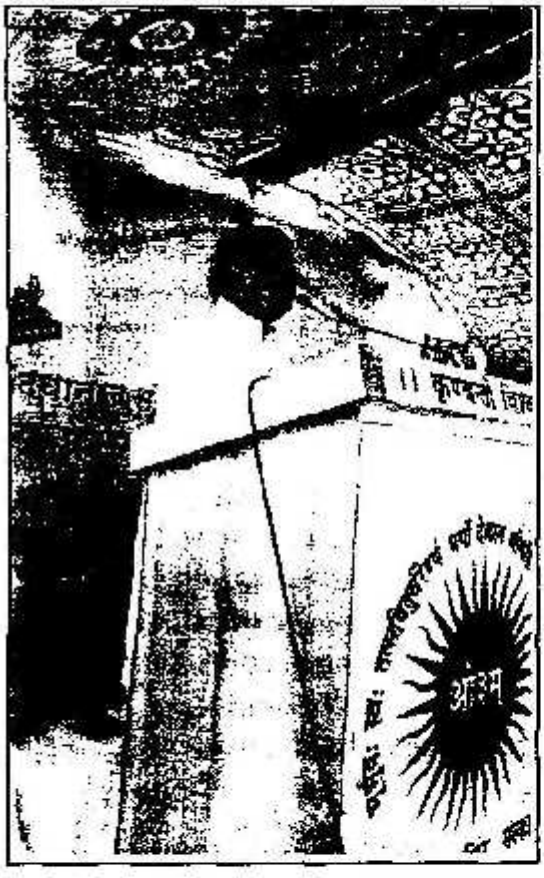

कार्यक्रम स्थल पर ही विचार टी वी चैनल के माध्यम से सिनेमा हॉल निर्मित किया गया, जिसमें प्रतिदिन 18 फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा. उसका उद्घाटन म. प्र. शासन के शिक्षामन्त्री **माननीय पारस जैन** के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम स्थल पर अनेक गणमान्य नागरिक तथा सभा के पदाधिकारी, श्री दलवीरसिंह राघव, श्री भगवानदास अग्रवाल, श्री दक्षदेव गौड़, श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार, संयोजक श्री गोविन्दराम आर्य, श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री दरबारसिंह आर्य, श्री काशीराम अनल, श्री दिनेश वाजपेयी, श्री अतुल वर्मा, श्री जगन्नाथसिंह आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री राधेश्याम बियाणी, श्री रमेशचन्द गोयल, स्वामी ऋतस्पति जी, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, वरिष्ठ कार्यकर्ता ओमप्रकाश अग्रवाल, डॉ. ललित नागर, डॉ. मणीन्द्र व्यास, श्री सुखदेव व्यास, श्री राजेन्द्र शर्मा प्रधान आर्य समाज उज्जैन सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे। सभा का कुशल संचालन श्री राजेन्द्र व्यास ने किया तथा आभार श्री गोविन्दराम आर्य ने व्यक्त किया।

**विशेष** : अभी तक की मेले की विशेषता यह है कि कई बड़े–बड़े पाण्डाल बने तो हैं किन्तु उनमें संख्या नगण्य है, दर्शकों ने सबसे अधिक संख्या इन 5 दिनों में आर्य समाज के पाण्डाल में ही होना बताया। विचार टी वी चैनल द्वारा निर्मित सिनेमा हॉल और प्रदर्शनी विशेष आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

विचार चैनल की ओर से प्रतिदिन 18 फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा, जो वैदिक सिद्धान्त, सनातन धर्म, महापुरूषों के जीवन और आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के संबंध में प्रदर्शित किया जाएगा। यह विशेष आकर्षण है, इसे परिवार सहित देखना चाहिए।

# वैदिक धर्म प्रचार का महत्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ

## दिनांक 22 अप्रैल से 21 मई 2016 तक

मान्यवर,

भारत वर्ष में कुम्भ और सिंहस्थ के नाम पर सम्भवतः ये विश्व के सबसे बड़े आयोजन होते हैं। जिसमें एक माह तक करोड़ो की संख्या में जन मानस का आना जाना होता है।

हम प्रयास करके भी कभी इतनी बड़ी संख्या एकत्रित नहीं कर सकते। यह हमारी बात, वैदिक सिद्धान्तों को करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचाने का बहुत बड़ा सुअवसर है। इस बार 21 अप्रैल से 21 मई तक एक नहीं दो स्थानों पर पण्डाल लगाकर वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई गई है। इसके द्वारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम आने वाली इतनी बड़ी संख्या में से लाखों व्यक्तियों तक अपनी बात पहुंचायें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऐसे ही अवसर पर कुंभ में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी।

भव्य यज्ञशाला, प्रवचन, व्याख्यान, भजन की प्रस्तुती, विशाल प्रदर्शनी, विचार चैनल के माध्यम से लघु फिल्म शो, विक्रय हेतु अनेक स्टॉल, वैदिक विचारधारा का निःशुल्क साहित्य वितरण, बाहरी साज सज्जा सह सबकुछ अभूतपूर्व करने का प्रयास प्रारम्भ हो चुका है।

किन्तु हम सबका सहयोग ही इस पवित्र वेद प्रचार के भव्य आयोजन को सफल बना सकता है।

अतः कृपया सभी इस पवित्र कार्य में अपनी आहुति प्रदान करें। कार्यक्रम हेतु आवश्यक सुझाव भी आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन के पते पर भेज सकते हैं।

सभी दान राशि **"सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति"** के नाम से चेक या ड्राफ्ट द्वारा, आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) के पते पर भेजें।

SBI A/c No. 35072661286 IFS Code : SBIN0000492

दान राशि खाते में जमा कर या जमा स्लीप पर अपना नाम, स्थान एवं पता लिखकर फोटो कॉपी भिजवायें।

Email : aryasmjujnkumbh2016@gmail.com

विनीत :

| **इन्द्रप्रकाश गांधी** | **लक्ष्मीनारायण पाटीदार** | **वेदप्रकाश आर्य** |
|---|---|---|
| सभाप्रधान | संयोजक | कोषाध्यक्ष |
| म.भा.आ.प्रति.सभा | वैदिक धर्म प्रचार समिति | वैदिक धर्म प्रचार समिति |
| **9425137097** | **9827078880** | **9425930484** |

।। ओ३म् ।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सिंहस्थ महापर्व 2016
# वैदिक धर्म प्रचार शिविर एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
## आर्य समाज
## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली,
## मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल
## भारतवर्ष की समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं
## के संयुक्त तत्वावधान में भव्य आयोजन
## कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा
## दिनांक 21 अप्रेल, चैत्र पूर्णिमा, गुरूवार से 21 मई 2016
## वैशाख पूर्णिमा तक

**22 अप्रेल 2016 चैत्र पूर्णिमा, सं. 2073 वि. शुक्रवार**

**प्रातः योगासन शिविर शुभारंभ** उद्घाटक श्री ज्ञानेन्द्रजी शास्त्री, समस्तीपुर
शिविर संयोजक – डॉ. दक्षदेवजी गौड, प्रधान आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर
डॉ. रामप्रसाद मालवीय

प्रातः 7.30 से 9.30 बजे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारंभ
यज्ञ ब्रह्मा आचार्या डॉ अन्नपूर्णाजी वेदपाठी ब्रह्मचारिणियां,
कन्या गुरूकुल देहरादून, उत्तराखण्ड
सुश्री शान्ति, सुश्री कल्पना, सुश्री स्वाति, सुश्री सुमेधा,
सुश्री कविता, सुश्री आदेश शर्मा

मध्यान्ह 2.30 बजे – वैदिक दर्शन प्रदर्शनी उद्घाटन
श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी प्रधान म.भा.आ.प्रति.सभा, भोपाल
विशेष अतिथि – श्री दलवीरसिंहजी राघव भू.पू.प्रधान म.भा.आ.प्रति.सभा
आर्य दर्शन चलचित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
श्री धर्मेशजी आर्य, सूरत विचार चैनल के तत्वावधान में

मध्यान्ह 3 से 4.30 राष्ट्र रक्षा सम्मेलन – अध्यक्ष श्री सुरेशजी आर्य
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
संयोजक – पं. राजेन्द्र जी व्यास, भू.पूर्व मन्त्री म.भा.आ.प्रति.सभा, भोपाल
वक्ता – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ उ.प्र., आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून
रात्रि 8 से 10.30 तक – भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र.
प्रबंधन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री मेरठ, उद्बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी

**23 अप्रेल 2016 शनिवार**

प्रातः 7.30 से 9.30 बजे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारंभ

10 से 12 भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र

प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी

मध्याह्न 2.30 बजे – वैदिक दर्शन प्रदर्शनी उद्‌घाटन

श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी प्रधान म.भा.आ.प्रति.सभा, भोपाल

विशेष अतिथि – श्री दलवीरसिंहजी राघव भू.पू.प्रधान म.भा.आ.प्रति.सभा

आर्य दर्शन चलचित्र प्रदर्शनी का उद्‌घाटन –

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

श्री धर्मेशजी आर्य, सूरत विचार चैनल के तत्वावधान में

मध्याह्न 3 से 4.30 राष्ट्र रक्षा सम्मेलन -- अध्यक्ष श्री सुरेशजी आर्य

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

संयोजक -- पं. राजेन्द्र जी व्यास, भूतपूर्व मन्त्री म.भा.आ.प्रति.सभा, भोपाल

वक्ता – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ उ.प्र., आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून

रात्रि 8 से 10.30 तक -- भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र.

प्रवचन -- आचार्य वेदपालजी उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून

मध्याह्नोत्तर 3 से 5 बजे – आर्य चिकित्सक सम्मेलन

संयोजक – डॉ. सतीशकुमार व्यास

अध्यक्ष – कविराज कमोर,

महामन्त्री अखिल भारतीय आयुर्वेद विशेषज्ञ सम्मेलन दिल्ली

वक्ता – डॉ. रमाशंकरजी निगम, वैद्य रामेश्वरजी पाण्डे, डॉ. विजय अग्रवाल, डॉ. राजीवजी पाठक, डॉ. ललित नागर

सायं 5.30 से 6.30 ऋग्वेद पारायण महायज्ञ

रात्रि 8 से 10.30 तक भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ प. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र., पं. सत्यपाल आर्य, देहरी

प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ

उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू

**24 अप्रेल 2016 रविवार**

प्रातः 7.30 से 9.30 बजे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारंभ

10 से 12 भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड म. प्र., पं. सत्यपाल आर्य, देहरी मन्दसौर

प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ

उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू

मध्याह्नोत्तर 3 से 5 बजे -- संगोष्ठी महर्षि दयानन्दजी सरस्वती की राष्ट्र को देन

संयोजक – आचार्य सुरेश शास्त्री, महू अध्यक्ष -- आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून

वक्ता – श्री प्रकाशजी आर्य महामन्त्री

सायं 5.30 से 6.30 तक – ऋग्वेदपारायण महायज्ञ
रात्रि 8 से 10 तक भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र., पं. सत्यपाल आर्य, देहरी
प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ
उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू

**25 अप्रेल 2016 सोमवार**

प्रातः 6 से 7 – योगासन शिविर संयोजक – श्री ज्ञानेन्द्रजी शास्त्री, समस्तीपुर
7.30 से 9.30 तक ऋग्वेदपारायण महायज्ञ
10 से 12 – भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र., पं. सत्यपाल आर्य, देहरी
प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ
उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू
मध्यान्ह 3 से 5 तक – संगोष्ठी – वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है
संयोजक – पं. रामनिवासजी शास्त्री गाजियाबाद उ. प्र.
अध्यक्ष – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ
वक्ता – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू
सायं 5.30 से 6.30 तक – ऋग्वेदपारायण महायज्ञ
रात्रि 8 से 10 तक भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र., पं. सत्यपाल आर्य, देहरी
प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ
उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू

**26 अप्रेल 2016 मंगलवार**

प्रातः 6 से 7 - योगासन शिविर
7.30 से 9.30 तक ऋग्वेदपारायण महायज्ञ
10 से 12 – भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र., पं. सत्यपाल आर्य, देहरी
प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ
उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू
मध्यान्ह 3 से 5 तक – संगोष्ठी – वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है
संयोजक – पं. रामनिवासजी शास्त्री गाजियाबाद उ. प्र.
अध्यक्ष – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ
वक्ता – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू
सायं 5.30 से 6.30 तक – ऋग्वेदपारायण महायज्ञ
रात्रि 8 से 10 तक भजन – श्री भूपेन्द्रसिंहजी आर्य, अलीगढ़ पं. कमलकिशोर शास्त्री, भोपाल, पं. काशीरामजी अनल, कानड़ म. प्र., पं. सत्यपाल आर्य, देहरी
प्रवचन – आचार्य वेदपालजी शास्त्री, मेरठ
उद्‌बोधन – आचार्या अन्नपूर्णाजी, देहरादून, आचार्य सुरेशजी शास्त्री, महू

# प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

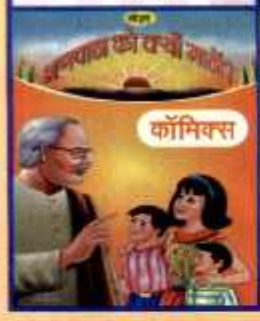

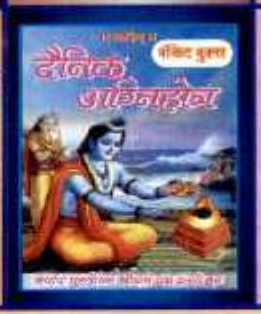


अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

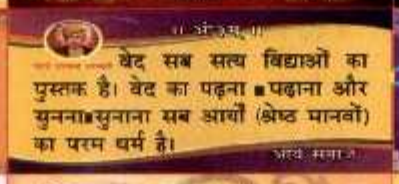

# मानव कल्याणार्थ

## आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू

ISSN # 94262-71062